thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 26 10 से 16 जुलाई 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 आ. शु. 13

आर्य समाज की एकता मेरी प्राथमिकता होगी

- स्वामी आर्यवेश

वेद को घर-घर तक पहुँचाने के लिए 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने का संकल्प

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा की बैठक जो 2 जुलाई, 2014 को सभा के सभागार में आयोजित की गई थी, उसमें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तेजस्वी आर्य संन्यासी सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने सभा प्रधान के पद से त्याग पत्र देकर सभा में उपस्थित सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों तथा आर्य नेताओं की भावनाओं का आदर करते हुए सभा प्रधान का गुरुत्तर दायित्व प्रसन्नता पूर्वक मुझे सौंप दिया। स्वामी जी के इस एक कदम ने उन सभी आलोचकों के मुँह पर ताला जड़ दिया जो उनके प्रति गलत धारणाएं पाल कर बैठे थे। स्वामी जी के इस अनुकरणीय त्याग ने उनकी यश:कीर्ति को दिग-दिगान्तर में सुवासित कर दिया। स्वामी जी का जीवन सामाजिक न्याय और सार्वजनिक समानता के सक्रिय साधक का दर्पण है। वे पिछले 50 वर्षों से मानवीय अधिकार एवं सामाजिक न्याय के अभियानों का अंग रहे हैं तथा उन्हें विश्व मंच पर शांति और स्वतन्त्रता के उद्वाहक के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। जहां तक मेरा प्रश्न है मैंने हमेशा ही स्वामी जी के दिशा-निर्देश पर ही कार्य किया है पद मेरे लिए कोई महत्त्व नहीं रखता लेकिन आप सबकी भावनाओं का आदर करते हुए इस गुरुतर दायित्व को सहर्ष स्वीकार करता हूँ। यदि हम सब मिलकर आर्य समाज की सेवा करेंगे और आर्यजनों का विश्वास प्राप्त करेंगे तो हर बाधा को पार करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। मेरा सबसे पहला और प्रमुख कार्य होगा आर्यों में एकता, संगठन को मजबूत बनाने के लिए हर संभव प्रयास प्राथमिकता के आधार पर किया जायेगा। अब तक लाखों रुपये तथा आर्य समाज की ऊर्जा का व्यय व्यर्थ में हो चुका है और कोई परिणाम नहीं निकला, मैं चाहता हूँ कि हम सब मिल बैठकर सर्व सम्मत हल निकालें और आर्य समाज की शक्ति और ऊर्जा को आर्य समाज को उन्नत करने में लगायें। मेरा उन सभी भाईयों से विनम्र आग्रह है कि वे इस पर गम्भीरता से विचार करें और संगठन को मजबूत बनाने के प्रयासों में अपना योगदान प्रदान करें। आर्य समाज के पास आज उच्चकोटि का नेतृत्व है उच्च कोटि के विद्वान हैं, कार्यकर्त्ता हैं और साहित्य है सारे साधन आर्य समाज के पास बहुतायत से हैं लेकिन वे सब बिखरे पड़े हैं, उनको एकत्र करने की आवश्यकता है, यदि हम संगठनात्मक एकता के साथ योजनाबद्ध ढंग से चलें तो कोई कारण नहीं है कि आर्य समाज को गौरवान्वित न कर सकें। निराशा की कोई बात सामने नहीं है। मेरी योजना है कि देशभर में आर्य महासम्मेलन किये जायें, सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर प्रखर आन्दोलन हों, चेतना यात्राएं निकलें, गोष्ठियां हों। हमारे पास कार्यक्रम होगा, हम संगठन की शक्ति का महत्त्व समझ पायेंगे तो कोई कारण नहीं है कि हम आर्य समाज को गति न प्रदान कर सकें।

संगठन को मजबूत करने के साथ-साथ कन्या भ्रूण

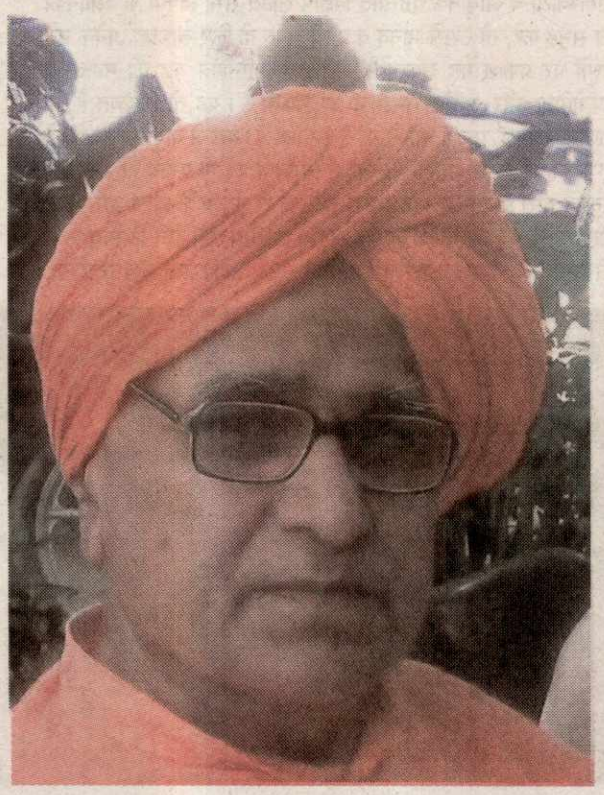

हत्या का प्रबल विरोध, नशाखोरी से मुक्ति, हिंसा रहित समाज का निर्माण तथा महिला उत्पीड़न जैसे मुद्दों को प्रखरता के साथ उठाया जायेगा तथा स्वामी अग्निवेश जी द्वारा निर्देशित सप्तक्रांति के मुद्दे जिनमें नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, आर्थिक शोषण, धार्मिक पाखण्ड, जातिवाद, साम्प्रदायिकता कुछ ऐसे राष्ट्रीय मुद्दे हैं जिनको लेकर हमें अपने आन्दोलनात्मक स्वरूप को प्रखर एवं मुखर करने के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। सामाजिक उन्नति के लिए इन विशेषताओं का उन्मूलन आवश्यक है। नैतिक, वैचारिक और चारित्रिक रूप से आर्य समाज ही वह संस्था है जो इनसे लोहा ले सकती है और हम इसके लिए कृत संकल्प हैं।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में वेद सर्वोपरि रहे हैं, जीवन की हर समस्या का निदान वेद में अन्तर्निहित है, जो व्यक्ति सतत जागरूक व सक्रिय होकर वेदाध्ययन करेगा वही समस्या का समाधान ढूंढ़ लेगा। आर्य समाज यदि मजबूती से घर-घर वेद का प्रकाश फैलाये और विश्व स्तर पर अपनी विशेषताओं की धाक जमाये तथा हम आर्य समाजी वेद के अनुरूप जीवन जीना सीख लें तो निश्चित रूप से वेद की प्रासंगिकता सिद्ध कर पायेंगे। हमारी योजना है कि वेद तथा अन्य वैदिक साहित्य का सुन्दर प्रकाशन किया जाये। हमने संकल्प लिया है कि प्रारम्भिक अवस्था में 25 हजार वेद सैट का प्रकाशन किया जायेगा तथा कम से कम 25 हजार घरों में वेद पहुँचाया जायेगा। वेदों के प्रकाशन में सुन्दर कागज, पक्की तथा आकर्षक बाईंडिंग तथा सुन्दर छपाई का विशेष ध्यान रखा जायेगा। यह वेद इस प्रकार के प्रकाशित होंगे कि दीर्घ समय तक यह परिवार में सुरक्षित रह सकें। वेद के इस प्रकाशन में लगभग तीन करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है। हमारी अपील है समस्त उन लोगों से जो वेद को ईश्वरीय ज्ञान तथा मानव मात्र के लिए उपयोगी मानते हैं ऐसे ऋषि भक्त आगे आयें और इस वेद प्रकाशन के संकल्प को पूर्ण करने में अपना योगदान प्रदान करें।

महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुसार समाज में वैदिक सिद्धान्तों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करके आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों, संन्यासियों एवं उपदेशकों को यह अवसर प्रदान किया जायेगा कि वे अपने ज्ञान से लोगों को आलोकित कर सकें।

समस्त संन्यासियों, वानप्रस्थियों को भी यज्ञ, योग एवं औषधीय विज्ञान का प्रशिक्षण देकर उन्हें प्रचार कार्य में लगाया जायेगा जिससे अधिक से अधिक लोगों में आर्य समाज की आवाज को पहुँचाया जा सके। युवा वर्ग को आर्य समाज की तरफ आकृष्ट करने के लिए युवकों एवं युवतियों को शिविरों, विचार गोष्ठियों, भाषण प्रतियोगिताओं, खेलकूद प्रतियोगिताओं, निबन्ध लेखन आदि के माध्यम से प्रशिक्षित करके आर्य समाज में दीक्षित किया जायेगा। राष्ट्रीय स्तर पर कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्यायें तथा महिलाओं पर होने वाले समस्त प्रकार के व्यभिचार तथा अत्याचार के विरुद्ध समाज के अन्य मत, सम्प्रदाय एवं सामाजिक संगठनों को साथ लेकर जन-जागरण अभियान चलाया जायेगा और सरकार से भी विशेष सहयोग लिया जायेगा। इसके अतिरिक्त नशे की प्रगति को रोकने के लिए सरकार के सहयोग से नशाबन्दी अभियान भी युद्ध स्तर पर प्रारम्भ किया जायेगा। इस तरह सप्तक्रांति के समस्त बिन्दुओं पर पूरी सजगता के साथ अपने कार्य को तीव्र गति से चलाया जायेगा और इन कार्यों में समाज के विभिन्न वर्गों का हर स्तर पर सहयोग लेने का प्रयत्न किया जायेगा। मेरी सभी ऋषि भक्तों से अपील है कि हम सब मिलकर संगठित होकर शान्तिपूर्ण एवं प्रेमपूर्ण ढंग से समाज निर्माण के कार्य को आगे बढ़ायें, आप सबका स्वागत है। जो आर्यजन उपरोक्त बिन्दुओं पर सहयोग करना चाहते हैं वे अपना पता, दूरभाष नम्बर एवं अन्य जानकारी सभा में भिजवाने की कृपा करें जिससे उनका यथा सम्भव सहयोग प्राप्त किया जा सके। आर्य समाज की एकता के सम्बन्ध में आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

'हमारा पर्यावरण व प्राणी जगत'

-मनमोहन कुमार आर्य

सारी दुनियां में पर्यावरण एक ऐसा ज्वलन्त विषय है जिसको लेकर बुद्धिजीवी वर्ग अत्यन्त चिन्तित व आन्दोलित है। ऐसा इस कारण से है कि पर्यावरण कोई साधारण समस्या नहीं है अपितु यह मनुष्य जाति व समस्त प्राणी जगत के जीवन मरण का प्रश्न है। यदि पर्यावरण को सुरक्षित व नियंत्रित न किया गया तो मानव जाति सहित समस्त प्राणी जगत का भविष्य अनिश्चित, असुरक्षित, अन्धकारमय व विनाशकारी हो कर उसके अस्तित्व को समाप्त भी कर सकता है। पर्यावरण प्राणी जगत के लिए ऐसा ही है जैसा कि चेतन-तत्व जीवात्माओं के लिए उनके अपने शरीर अर्थात् आत्मा के लिए मानव शरीर। ऐसा इसलिए है कि मानव शरीर उसमें निवास करने वाली जीवात्मा का एक प्रकार से पर्यावरण ही है। हम अपने शरीर की रक्षा के सभी उपाय करते हैं। स्नान करके इसे स्वच्छ रखना, शुद्ध वायु में श्वांस, शुद्ध जल का पान, पौष्टिक व सन्तुलित भोजन, समय पर सोना व जागना, पुरुषार्थ व तप, ईश्वरोपासना, मन व मस्ति-क में सत्य व शुद्ध विचार, यज्ञ-अग्निहोत्र, माता-पिता की सेवा, परोपकार, समाज सेवा, निर्धनों की सहायता, भूखों को भोजन, अज्ञानियों को शिक्षा आदि सब कुछ करते हैं। इसका प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है और वह स्वस्थ, निरोग, दीर्घजीवी, बलशाली, प्रतिष्ठित, यशस्वी, स्वावलम्बी, सुख व शान्ति से युक्त रहता है। जिस प्रकार हमारी आत्मा अर्थात् हमें, यह जड़ व मरणधर्मा शरीर स्वस्थ व निरोगी चाहिये उसी प्रकार से शरीर को स्वयं को स्वस्थ व निरोग रखने के लिए शुद्ध, सन्तुलित, प्रदूषण रहित, हरा-भरा प्राकृतिक वातावरण तथा शुद्ध अन्न-वनस्पति-औषधियाँ चाहियें। यदि शरीर को स्वच्छ व प्रदूषण रहित वातावरण व पर्यावरण नहीं मिलेगा तो हमारे शरीर का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा और जीवन के सामान्य कार्यों को करने के स्थान पर हम जीवन की पूरी अवधि इसे रोगों से बचाने व आ गये अनचाहे रोगों के उपचार आदि में लगे रहेगें। सुख का नाम भी शायद जीवन में याद न रहें, ऐसी स्थिति पर्यावरण के प्रदूषित होने पर भवि-य में आ सकती है।

आईये, कुछ चर्चा हम पर्यावरण की भी कर लेते हैं। पर्यावरण, पृथिवी-अग्नि-जल-वायु-आकाश की समस्त प्राणी जगत के जीवन-आयु-स्वास्थ्य के अनुकूल शुद्ध व आदर्श स्थिति को कहते हैं। यदि हमारा वायुमण्डल शुद्ध व प्रदूषण से मुक्त है, नदियों, नहरों, कुओं, तालाब, सरोवरों, वर्षा व खेतों में सिंचाई का जल भी शुद्ध व हानिकारक प्रभाव से मुक्त है, हमारी पृथिवी की उर्वरा-शक्ति अपनी अधिकतम क्षमता के साथ विद्यमान है, हमारे जंगल घने व सुरक्षित है, देश के 3/4 भाग में वन व सभी प्रकार के वन्य-जन्तु हैं, भूमि के शेष भाग में कृषि-खेत, नगर-गांव-सड़के व उद्योग आदि हैं, खनन द्वारा भूमि का अनावश्यक व अनुचित दोहन नहीं होता है, वातावरण स्वास्थ्य के अनुकूल है, समय पर वर्षा होती हो, वर्षा का जल पीने योग्य हो तथा उसमें हानिकारक तत्व घुले हुए न हों, सभी ऋतुयें समय पर आती-जाती रहती हों, तो यह मान सकते हैं कि हमारा पर्यावरण ठीक व सामान्य है। आज की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। अतः अब यह देखना आवश्यक है कि यह स्थिति उत्पन्न कैसे हुई?

हमारी सृष्टि आज से 1,96,08,53,114 वर्ष पूर्व एक सत्य, चेतन व अपौरुषेय सत्ता द्वारा रची गई है। तभी से इस पर मानव वा प्राणी जगत भी हैं, वनस्पतियां, जल, अग्नि, वायु आदि सब कुछ है। आरम्भ में वायु मण्डल एवं पूरा पर्यावरण आदर्श रूप में था अर्थात् उसमें किंचित भी असन्तुलन या प्रदूषण नहीं था। जनसंख्या कम थी। धीरे-धीरे जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। इस कारण, सम्भवतः एकान्त प्रियता या भीड़भाड़ से दूर रहने के स्वभाव के कारण, लोग दूर-दूर जा कर बसने लगे और आरम्भ की कुछ शताब्दियां व्यतीत होने के साथ पृथिवी के चारों ओर मानव पहुंच गये व अपने निवास स्थान पृथिवी के सभी भागों में बना लिये। मनुष्य जहां रहता है वहां उसके शौच, रसोई या भोजन, वस्त्रों को धोने व अन्य कार्यों से जल व वायु में प्रदूषण उत्पन्न होता है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि प्रदूषण व पर्यावरण के बारे में बहुत सतर्क, सजग व सावधान थे। उन्होंने मानव जीवन पद्धति life style को कम से कम आवश्यकताओं वाली बनाया। वह जानते थे कि जितनी सुख की सामग्री प्रयोग में लायी जायेगी, उतना ही अधिक प्रदूषण होगा और उससे मनुष्य का जीवन, स्वास्थ्य व सुख-शान्ति प्रभावित होगें। इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि हमारी इन्द्रियों की शक्ति सीमित होती है। इसे जितना कम से कम प्रयोग करेंगे व खर्च करेगें उतना अधिक यह चलेगीं या काम करेगी। जो व्यक्ति अधिक सुख-साधनों का प्रयोग करता है उसकी इन्द्रिया व शरीर के अन्य उपकरण, हृदय, पाचन-तन्त्र यकृत-प्लीहा-लीवर-किडनी आदि प्रभावित होकर विकारों आदि से ग्रसित होकर रूग्ण हो जाते हैं। होना तो यह चाहिये कि हम तप, पुरूषार्थ, श्रम, योगासन, हितकर शाकाहारी भक्ष्य श्रेणी का भोजन, अभक्ष्य पदार्थों का सर्वथा व पूर्णतया त्याग, स्वाध्याय, ध्यान व चिन्तन पर अधिक ध्यान दें जिससे हमारा शरीर स्वस्थ व सुखी रहे। वायु व जल प्रदूषण को रोकने के लिए हमारे पूर्वजों ऋषियों ने एक ऐसी अनोखी नित्यकर्म विधि बनाई जो सारी दुनियां में अपनी मिसाल स्वयं ही है। इसके लिए उन्होंने वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ गोघृत, स्वास्थ्यवर्धक वनस्पतियों, ओषधियों, सुगन्धित व पुष्टिकारक पदार्थो से दैनिक अग्निहोत्र का विधान किया। इस अग्निहोत्र को करने से सभी पदार्थ अग्नि के संसर्ग से सूक्ष्म होकर वायु मण्डल में फैल जाते हैं। वायुमण्डल में वायु के प्रदूषणयुक्त अणु-परमाणु यज्ञ की अग्नि से सूक्ष्म किए गये गोघृत, वनस्पति-ओषधि-सुगन्धित-पुष्टिकारक द्रव्य-सामग्री के अणु-परमाणु से मिलकर प्रदूषण के प्रभाव को समाप्त करते थे। इससे वायुमण्डल अपनी आदर्श स्थिति-संरचना-composition में रहता था। इस प्रकार यज्ञ से उत्पन्न वायु-गैस-सूक्ष्मकणों के वायुमण्डल में चहुंदिश फैलाव से दूर-दूर तक का वायुमण्डल शुद्ध व पवित्र व रोगकृमि रहित हो जाता था। वर्षा होने पर वह यज्ञ के परमाणु-अणु व कण हमारी भूमि पर आते थे जो नाना प्रकार की वनस्पतियों, अन्न, पुष्पों व सभी प्रकार की ओ-धियों की गुणवत्ता में वृद्धि value edition करते थे। हम यह भी अनुभव करते हैं कि यज्ञ के प्रभाव का वनस्पति व समस्त प्राणी जगत पर अध्ययन व परीक्षण कर उससे होने वाले अच्छे प्रभाव पर अनुसंधान की आवश्यकता है। हम समझते हैं कि यदि ऐसा अनुसंधान कोई वेद ज्ञानी, योगाभ्यासी व आधुनिक वनस्पति विज्ञान सहित सभी विषयों के वैज्ञानिकों का समूह करे, तो उससे मानव व प्राणी जगत के लिए लाभप्रद अनेक नये तथ्यों पर प्रकाश पड़ सकता है और तब अग्निहोत्र यज्ञ की महत्ता व उपयोगिता और अधिक समझ में आ सकती है। यह तो निश्चित है कि वायु व जल का वनस्पतियों से गहरा सम्बन्ध है। यज्ञ से वायु मण्डल में जो गुणात्मक परिवर्तन होता है, उसका वनस्पतियों पर भी प्रभाव तो होगा ही। मनुष्यों द्वारा यह प्रभाव एक रूप में नासिका से सुगन्ध के ग्रहण द्वारा प्राप्त होता है। यज्ञ व अग्निहोत्र की यह सुगन्ध आरोग्यकारी होने के साथ फूलों की सुगन्ध से अधिक प्रभावकारी होती है। अब क्योंकि यज्ञ में वनस्पतियां,

ओषधियाँ, गोघृत व शक्कर आदि मीठे व पौष्टिक अनेक पदार्थ भी डाले गये हैं, तो उनका प्रभाव भी मानव शरीर व जीवन पर निश्चित रूप से होगा। इस प्रभाव को वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध करने व जानने के लिए यज्ञ-प्रेमियों को प्रयास करना चाहिये। इस सन्दर्भ में यह कहना भी उचित होगा कि हमने विदेशी पाश्चात्य संस्कार इतने अधिक ले लिये हैं कि वायु व वृष्टि के संशोधक अपने प्राचीन जीवनोपयोगी क्रिया-कलापों, कर्मकाण्डों व विधि-विधानों को तिलांजति दे रखी है। उन पर विचार ही न करना करना हमारी घातक सोच है। आज हमारा वायु मण्डल अत्यधिक अशुद्ध है जिसका कारण उद्योगों से उत्पन्न धुएं, वाहनों में ईंधन के जलने से निकलने वाली हानिकारक गैसों तथा वृक्षों की कमी आदि हैं। इसी प्रकार से उद्योगों में अनुपयोगी पदार्थों व घरेलू अनावश्यक पदार्थों को जल में डाल कर बहा दिया जाता है जिससे वायु व जल दोनों प्रदूषित हो गये हैं। इनका सुधार तो हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करके व विज्ञान की सहायता से कर सकते हैं। अधिक संख्या में वृक्षारोपण कर भी समस्या को कुछ-कुछ कम किया जा सकता है। सरकार के साथ नागरिकों को अपना कर्तव्य पालन करना आवश्यक है।

आज सारा विश्व पश्चिम जगत के वैज्ञानिक व औद्योगिक उत्पादों के कुचक्र में फंसकर अपने स्वाभाविक व नैसर्गिक जीवन तथा धर्म-कर्म को भूल कर एवं उसे छोड़कर प्रकृति का अधिक से अधिक दोहन व उससे उपलब्ध साधनों के उपभोग को ही जीवन की सफलता का पर्याय मान रहा है। इससे समाज में नाना प्रकार के रोग व दुःख उत्पन्न होकर मनुष्यादि प्राणी अल्पायु में अकाल मृत्यु के मुख में जा रहे हैं। विवेकहीन होने के कारण इसका प्रमुख कारण आवश्यकता से अधिक व अनेक अनुपयोगी प्रकार के भोग-पदार्थ जिसमें भव्य निवास, मोटर-गाड़ी, खर्चीलें स्कूलों की पाश्चात्य मूल्य प्रधान शिक्षा, पुरूषार्थ रहित आरामदायक जीवन, बड़े बैंक बैलेन्स के साथ-साथ असमय का भोजन व खाना-पीना, अनियमित सोना-जागना, असन्तुलित व सीमा से अधिक दूरदर्शन, मोबाइल आदि का प्रयोग जिसका प्रभाव आंखों, कानों, मन, मस्तिष्क व शरीर के यन्त्र-तन्त्र पर प्रतिकूल रूप से पड़ रहा है। इनसे जीवन में होने वाले हानिकारक प्रभाव को पीड़ित व उसके परिवार वाले जान ही नहीं पाते हैं। डाक्टर आदि इस पर कुछ कम ही बताते हैं। हम समझते हैं कि जीवन को स्वस्थ व प्रसन्न रखने के लिए प्रातः 4 से 5 बजे के बीच उठना व रात्रि 10 बजे तक सो जाना, योगासन व व्यायाम करना, शरीर को स्नान आदि से स्वच्छ रखना, त्वचा पर किसी प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग न करना व केवल हर्बल प्रसाधनों का बहुत अल्प मात्रा में प्रयोग करना, अल्पमात्रा में शुद्ध व शाकाहारी पौष्टिक भोजन जिसमें पौष्टिक अन्न से बनी चपाती, चावल, दालें, हरि तरकारियां, दूध, दही, मट्ठा, सभी प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक फल, बादाम, काजू, पिस्ता आदि हों, समय पर लेना या करना चाहिये। अग्निहोत्र यज्ञ से हमारे घरों का वातावरण भी पूर्ण शुद्ध रहना चाहिये, हमें अपने विचार भी शुद्ध व पवित्र रखने चाहिये जिसके लिए हमें वेद के विधान के अनुसार ईश्वरोपासना-संन्ध्या आदि भी सीभ्करनी चाहिये। यदि ऐसा करेगें तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं अन्यथा रोगों का आक्रमण आयु की किसी भी स्थिति व अवस्था में हो सकता है।

हमारा पर्यावरण मुख्यतः पृथिवी, जल, वायु व आकाश का समूह हैं। हमारा भोज्य-अन्न शुद्ध भूमि में शुद्ध प्राकृतिक खाद व पानी से उत्पन्न होना चाहिये। आज कल खेतों में प्रयोग किये जाने वाले रसायनिक खाद व कीटनाशकों का छिड़काव भी हमारे स्वास्थ्य को बिगाड़ने व असाध्य रोगों को उत्पन्न करने का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हुआ है। देश भर में एक मिथ्या-विश्वास पैदा हो गया है कि रासायनिक खाद व कृत्रिम कीटनाशकों के छिड़काव से पैदावार अधिक होती है। वास्तविकता यह है कि हम प्राकृतिक खादों व कीटनाशकों से भी वही परिणाम प्राप्त कर सकते है और रोगों से बच सकते हैं। यद्यपि बुद्धिमान व विद्वानों को इस वि-य से सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान है परन्तु कुछ विशेष कार्य होता दिखाई नहीं दे रहा है। रासायनिक खाद आदि के प्रयोग से उत्पन्न होने वाले अन्न से असाध्य रोगों में कैंसर, हृदय व मधुमेह आदि अनेक भयंकर रोग सम्मिलित हैं। बड़े व छोटे नगरों तथा ग्रामों तक कृत्रिम प्रकार का विषैला दूध, दही व घृत का प्रतिदिन विक्रय हो रहा है। आजकल मुनाफाखोरी के चक्कर में सब्जियों व फलों में विषैले इंजेक्शन लगाकर उनका आकार अल्प-समय में बढ़ा दिया जाता है। इससे एक ओर कुछ थोड़े से समाज विरोधी लोग मालामाल हो रहे हैं तो दूसरी ओर असंख्य लोग रोगों का शिकार होकर असमय मृत्यु का ग्रास बन रहे हैं। समाज के शत्रु धन के लिए ऐसे घिनौने काम करते हैं जिन्हें सरकारी तन्त्र के लोभ की प्रकृति वाले कर्मियों से सहयोग प्राप्त होता है। यह बहुत ही चिन्ताजनक व स्वाधीन देश के लिए अपमानजनक है। हमें लगता है कि हमारी व्यवस्था के संचालकों को लोगों की अनुचित व बुरी प्रवृत्ति का न तो पूरी तरह से ज्ञान है और न उसे समाप्त करने में उनकी दृण इच्छा शक्ति ही दृष्टिगोचर होती है। भगवान भरोसे ही आज का मनुष्य ऐसी विपरीत परिस्थिति में जीवित है। अतः आवश्यकता है कि बाजार से खरीदी जाने वाली प्रत्येक वस्तु को लेने से पूर्व ग्राहक द्वारा उसकी शुद्धता की पूरी परीक्षा हो अथवा संदिग्ध वस्तुओं का प्रयोग ही न किया जाये व अत्यल्प मात्रा में करें। बुद्धिमान लोग जानते हैं कि इन समाज विरोधी कार्य में अशिक्षा व चारित्रिक गिरावट के साथ शीघ्र अधिक धन बटोरने का मनोविज्ञान काम करता है। इनका निवारण करना शिक्षा व समाज शास्त्रियों के साथ सरकार का काम है। यदि सरकारी मशीनरी ठीक काम करे और हमारी दण्ड व्यवस्था चुस्त-दुरूस्त हो तो परिणाम कुछ अच्छे हो सकते हैं।

हमारे पशु, पक्षी व सभी मनुष्येतर प्राणी भी हमारी सृष्टि और पर्यावरण का अंग हैं। ईश्वर ने, जिसे हमारे नास्तिक बन्धु अज्ञान, हठ व दुराग्रह से 'प्रकृति' कहते हैं, मनुष्य को शाकाहारी प्राणी बनाया है। मनुष्यों के दांतों की बनावट शाकाहारी प्राणियों के समान है। मांसाहारी प्राणियों के दांतों की बनावट व आकृति शाकाहारी प्राणियों से अलग प्रकार की होती है। मनुष्य की भोजन पचाने की प्रणाली भी शाकाहारी प्राणियों के समान है। शाकाहारी पशु अपनी सारी आयु स्वस्थ व सुखी रहते हुए व्यतीत करते हैं। उनके सामने सामिष वस्तुएं या भोजन रखा भी जाये तो भी वह उसका प्रयोग नहीं करते। इसी प्रकार ऐसे लाखों निरामिष भोजी लोग हैं जिन्होंने अपने पूरे जीवन किसी सामिष पदार्थ का भक्षण नहीं किया और 80 व 100 वर्ष के बीच की आयु में भी पूर्ण स्वस्थ हैं। इससे सिद्ध होता है कि मनु-य स्वभावतः सामिष भोजी नहीं है। सामिष-भोजी मनुष्यों की प्रकृति, स्वभाव, जीवन, स्वास्थ्य, चरित्र, मन व बुद्धि, काम की प्रवृत्ति यह सभी मांसाहार व मदिरापान आदि से कुप्रभावित होती हैं। सामिष भोजन करना व मूक प्राणियों को किसी भी प्रकार से दुःख देना ईश्वर व प्रकृति के प्रति जघन्य अपराध है जिसका दण्ड, न कम न अधिक, तो ईश्वर से समय आने पर मिलता ही है। अतः "जिओ व जीने दो" के सिद्धान्त का पालन प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिये। इस सिद्धान्त में अंहिसा तो है ही साथ में यह सृष्टि व प्रकृति को मानव जीवन के प्रति अधिक उपयोगी व सहयोगी बनाता है और मानव जीवन को सुखी, स्वस्थ व निरोग रखता है।

अब यह निश्चित हो गया है कि कृत्रिम रसायनिक खाद से हमारी कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति

अगले पृष्ठ पर जारी है

thearyasamaj.org

शान्ति की वर्षा

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

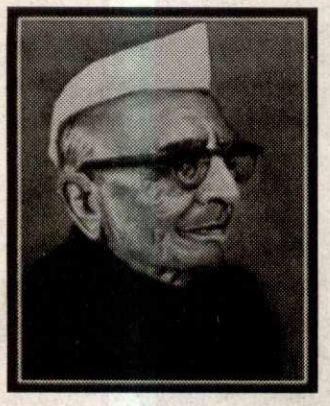

हम नित्यप्रति प्रात:काल उठकर आचमन मन्त्र द्वारा परमात्मा से प्रार्थना करते हैं, "हे प्रभो! हम पर शान्ति की वर्षा करो।"

क्या हम अपनी प्रार्थना सुनते हैं?

परमात्मा हमारी यह प्रार्थना कहाँ तक सुनता है और किस सीमा तक स्वीकार करता है, यह प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव ही कहेगा परन्तु क्या कभी हमने भी यह सोचा है कि हम अपनी प्रार्थना को स्वयं भी सुनते हैं अथवा नहीं?

यदि ईश्वर पूछ लेता तो

मेरे मन में कभी कभी ऐसा विचार आता है कि यदि परमात्मा भी मनुष्य जैसे विचार रखता होता तो वह हम से यह पूछता कि तुम प्रतिदिन मुझसे यह प्रार्थना करते हो कि तुम पर शान्ति की वर्षा करूँ जबकि वस्तु स्थिति यह है कि तुम को स्वयं न तो शान्ति के मूल्य का पता है और न ही तुम शान्ति बनाये रखने के लिए यत्न करते हो।

छलनी में प्राप्त किया दूध किस काम आयेगा?

उदाहरण स्वरूप यदि आपको कोई दूध देने लगे और आप उसे छलनी में लेने लगें तो उस दूध से आपको क्या लाभ मिलेगा?इसी प्रकार यदि परमात्मा शान्ति की वर्षा करे और आपके पास उस शान्ति को रखने के लिए कोई उचित पात्र न हो तो वह शान्ति किस काम आयेगी?आकाश से मेघ प्रतिवर्ष बहुत वर्षा करते हैं परन्तु करोड़ों टन जल जो मेघ वर्षाते हैं, व्यर्थ में बहता हुआ समुद्र में मिल जाता है और हमारे लाखों खेत केवल इस कारण से हरा भरा होने से वंचित रह जाते हैं कि हम इस बरसते हुए जल को एकत्र नहीं कर पाते।

शान्ति का कोई ग्राहक ही नहीं

क्या परमात्मा शान्ति की वर्षा नहीं करता?परन्तु हम को तो इतना भी ज्ञान नहीं कि शान्ति होती क्या है। जिस वस्तु को मनुष्य जानता ही नहीं, पहचानता ही नहीं, वह उसका महत्त्व क्या समझेगा?परमेश्वर ने संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं बनाई जो शान्ति की वर्षा न करती हो परन्तु हम तो शान्ति के ग्राहक ही नहीं प्रत्युत अशान्ति चाहते हैं और उसी का प्रचार करते हैं। परमात्मा का स्पष्ट उत्तर यह है कि तुम छलिये हो। तुम कहते हो कि हम शान्ति चाहते हैं परन्तु वास्तव में तुम अशान्ति के इच्छुक हो अत: तुम्हें अशान्ति ही मिलती है।

शांति की स्थापना के लिए आपका योगदान क्या?

हम तनिक निज जीवन पर विचार करें। प्रात: उठिये और सोचिये कि आपने आज शान्ति के प्रचार में क्या यत्न किया है?अथवा आप किसी बीते दिन का स्मरण कीजिए। आज न सही, बीते कल का सही। आप अपने आप से पूछिये कि आप शान्ति के प्रचारक हैं अथवा अशांति के?

परिवार से ही आरम्भ कर दें

प्रश्न यह नहीं कि आप ने बाहर वालों अथवा शत्रुओं के जीवन में कटुता पैदा करने के लिए क्या कुछ नहीं किया। पहले परिवार से ही आरम्भ करिये। आपके परिवार में आपका अपनी पत्नी से कैसा व्यवहार है?क्या आप अपनी स्त्री के प्रिय हैं अथवा उसके शासक?उसके मित्र हैं अथवा थानेदार?क्या वह आपसे स्नेह करती है अथवा आपसे डरती है?यदि वह सुन्दर है और आप उसके सौन्दर्य पर मोहित हैं तो क्या आपने कभी यह भी पूछा है कि उसके मनोभाव क्या हैं?और क्या उसकी भी कुछ इच्छाएँ हैं जिनकी पूर्ति आपके लिए आवश्यक है।

मनु जी का कथन –

मनु ने कहा था कि जिन घरों में स्त्रियों की पूजा होती है वे देवघर हैं।

हम स्वयं पर नहीं स्त्रियों पर सन्देह करते हैं

क्या हमारे परिवार सचमुच देव परिवार हैं?हम स्त्रियों से आशा करते हैं कि वे अपना हृदय हमें सौंप दें परन्तु कमाल तो यह है कि हम अपना हृदय उन्हें सौंपने में असमर्थ हैं। हमें प्राय: उनके चरित्र पर सन्देह रहता है परन्तु अपने पर नहीं। हमारे समाज की यह सोच है कि पुरुष चरित्रहीन हो ही नहीं सकता। चरित्रहीनता का ढकोसला केवल स्त्रियों के ही लिए है। पुरुष स्वतन्त्र हैं। स्वतन्त्र तो प्रत्येक अवस्था में चरित्रवान् ही है क्योंकि उसके चालचलन के बारे में कोई पूछताछ नहीं कर सकता।

तनिक आप अपनी वाणी की ओर ही ध्यान दीजिए। विचारिये तो आप कितनी गालियाँ देते हैं तथा सब स्त्री के सम्बन्ध से। जब रुष्ट हों तब भी गाली और प्रसन्न हों तब भी गालियाँ देते हैं। संसार में कोई भी गाली नहीं जो स्त्री के हृदय को दुखाए बिना दी जा सके।

एक बार मैं एक सम्पन्न व्यक्ति के पुत्र को पढ़ा रहा था। वह लड़का अपने सेवक से किसी बात पर रुष्ट हो गया ओर उसे सुसरा कह दिया। यह सुनकर मैंने लड़के से पूछा, "क्या तुम्हारा विवाह हो चुका है?" (वैसे मैं जानता था कि वह अविवाहित है।) "नहीं।" लड़के ने उत्तर दिया।

"क्या होने वाला है?" मैंने प्रश्न किया।

उसने कहा – "नहीं।"

इस पर मैंने कहा – "तो सम्भवत: मैंने ही ठीक नहीं समझा। मेरा विचार था कि तुम्हारा विवाह इस सेवक की पुत्री से होने वाला है।"

वह बोला – "ऐसा कैसे हो सकता है?वह छोटी जाति का है। मैं ऊँची जाति का हूँ।"

दिन भर गाली वर्षा

मैंने कहा , "तो फिर तुम इस नौकर को सुसरा कहकर क्यों पुकारते हो?" वह बजाय लज्जित होने के हंस पड़ा और बोला – "हमारे यहाँ तो दिन भर इस प्रकार की गालियाँ दी जाती हैं।"

यह ठीक है परन्तु यह होता इसलिए है कि हममें अपना चाल-चलन ठीक रखने का भाव जाता रहा है। कभी-कभी तो हम दूसरों को अपमानित करने के लिए ऐसी-ऐसी गालियां निकालते हैं कि जिससे हमारी चरित्रहीनता ही प्रमाणित होती है फिर हम इस पर गौरव भी करते हैं।

क्या इसी प्रकार शान्ति हो सकेगी?

यह हुई एक बात। अब जीवन के अन्य विभागों पर आइये। हम कभी अपने से सम्बन्ध रखने वालों को यह नहीं सिखाते कि बोलचाल और व्यवहार में शान्ति रखनी चाहिए। जब अकेले बैठेंगे तो दूसरों के चरित्र की फाईल खोल देंगे। सारे मुहल्ले के लोगों की टीका टिप्पणी होगी और गन्दे से गन्दे दोष आरोपित किये जायेंगे। क्या इनसे शान्ति उत्पन्न होगी?

सभाओं में शान्तिपाठ तो है शान्ति कहाँ है?

तनिक सभा संस्थाओं की ओर आयें। हमारी सभाओं में पहले ईश्वर से प्रार्थना होती है और अन्त में शान्तिपाठ होता है परन्तु बीच में क्या होता है?

महर्षि दयानन्द जी ने मंगलाचरण के विषय में लिखा है कि आरम्भ में मंगलाचरण करो तो क्या मध्य में अमंगलाचरण करना चाहिए।

अशान्ति की धधकती आग

सच यह है कि हम आरम्भ में भी अमंगलाचरण करते हैं और बीच में भी। अन्तर केवल इतना है कि वाणी से कुछ कहते हैं और मन में कुछ रखते हैं। जब हमारी वाणी आचमन मन्त्र का पाठ करती होती है उस समय भी हमारी वाणी में अशांति की अग्नि की लपटें उठ रही होती हैं। हमको उस मिनट अथवा सैकण्ड की प्रतीक्षा होती है जब मन्त्र समाप्त हो और हम अपनी ईर्ष्या, द्वेष अथवा क्रोध को व्यक्त कर सकें।

इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम शान्ति की प्रार्थना करके स्वयं को धोखा देते हैं और ईश्वर को भी छलना चाहते हैं।

दुर्भावों से वातावरण प्रदूषित व विषैला

हमारे मन द्वेष, ईर्ष्या व शत्रुता से भरपूर हैं। हम अपने साधारण से व्यक्तिगत हितों व स्वार्थ के लिए दूसरों का गला काटने के लिए तैयार हो जाते हैं। अपने भले के लिए दूसरों का बुरा करने में संकोच नहीं करते। और अनेक बार तो द्वेष व बदले की भावना की यह आग इतनी उग्रता से भड़क उठती है कि हम दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए अपनी हानि की भी कतई चिन्ता नहीं करते। हमारे एजेण्ट नित्य प्रति दूसरों का गला काटते और उनकी आहों से संसार भर का वातावरण बिगाड़ देते हैं। वायुमण्डल को दूषित और विषैला करके रख देते हैं।

केवल स्वाद के लिए रक्तपात किया जाता है

कसाई घरों में प्रात: व सायं क्या होता है?क्या सहस्रों लाखों पशुओं को केवल इसलिए नहीं काटा जाता ताकि लोगों की भोजन के मेज पर विभिन्न प्रकार के भोजन सजाए जा सकें। केवल जिह्वा के स्वाद के लिए इतना अत्याचार व क्रूरता की जाती है।

सुन्दर पक्षी को चहचहाता देखकर

कई बार लोग जब किसी सुन्दर पक्षी को वृक्ष पर चहचहाते देखते हैं तो उनका जी चाहता है कि उसे मारकर उसके पंखों से अपना कमरा सजाएं। कठोर हृदय पुरुष व कोमल हृदय नारियां सभी ऐसा ही करते हैं तो फिर क्या हम शान्ति के प्रचारक हैं?यदि नहीं तो क्या हम ईश्वर से शान्ति की प्रार्थना करने के अधिकारी हैं?

– गंगा ज्ञान सागर पुस्तक से साभार

पिछले पृष्ठ का शेष

'हमारा पर्यावरण व प्राणी जगत'

अर्थात् अन्न उत्पादन की शक्ति व सामर्थ्य धीरे-धीरे कम व नष्ट होती है और जो अन्न प्राप्त होता है वह शरीर पोषण कम करता है और साथ हि अनेक असाध्य रोग उत्पन्न कर जीवन को समय से पूर्व मृत्यु का ग्रास बनाता है। अतः कृत्रिम खादों का प्रयोग समाप्त कर और प्राकृतिक खाद का प्रयोग बढ़ाने के लिए योजनायें बनायी जानी चाहियें। कृनि नीति की समीक्षा कर ऐसे उपाय करने चाहियें जिससे आज के युवा कृषि व कृषि कार्यों में अपना व्यवसाय चुनें। करने से क्या नहीं होता। यदि ऐसा करेंगें तब हि हमें स्वास्थ्यप्रद अन्न वा भोजन प्राप्त हो सकेगा अन्यथा विनाश व अन्धकार हमारे सामने उपस्थित है। दोनों में से एक को ही चुना जा सकता है। इस क्षेत्र में जागरण इस प्रकार का होना चाहिये कि हमारे राजनैतिक व सरकारी लोग किन्हीं आर्थिक व अन्य कारणों से हमारे स्वास्थ्य से खिलवाड़ न कर सके।

आजकल हमारे देश में लोगों के पास जो धन व सुख की सामग्री है उसमें भारी असामनता व अन्तर है। कुछ लोगों के पास अथाह धन व सुख के साधन है तो कुछ के पास जीने के लिए दो समय का भोजन भी नहीं है। करोड़ों लोग बिना पर्याप्त भोजन, शिक्षा व सुख-सुविधाओं के अपना जीवनयापन करते हैं। रोग होने पर ऐसे लोग बिना उपचार के मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। यद्यपि हमारे चिकित्सकों द्वारा चिकित्सक बनने पर यह शपथ ली जाती है कि वह हर रोगी का उपचार करेगें परन्तु फिर भी आम आदमी डाक्टरों के पास जाने की हिम्मत नहीं कर पाता। आम आदमी तो क्या आज मध्यम श्रेणी का व्यक्ति भी डाक्टर के पास किसी छोटी से छोटी बीमारी का उपचार कराने के लिए जाते समय डरता है कि कहीं लेने के देने न पड़ जायें। आज चिकित्सा के नाम पर कुछ लोग लूट करते हैं। अनावश्यक महंगे टैस्ट कराये जाते हैं, चाहे रोगी की सामर्थ्य हो या न हो। महंगी दवायें लिखी जाती हैं जिसका एक कारण इसमें कमीशन का लिया जाना भी होता है। इसमें कुछ सत्यता तो है ही। इसके अनेक उदाहरण भी सामने आ चुके हैं। यह एक प्रकार का चारित्रिक प्रदूषण है जो कि समाज व मनुष्य के अस्तित्व के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इसे बढ़ने नहीं देना चाहिये अन्यथा यह मनुष्य में दया, करूणा, प्रेम, ममता, संवेदना आदि सभी कुछ समाप्त कर समाज के प्रत्येक मनुष्य को दूसरे के भोग की वस्तु बना कर रख देगा। हमने ऐसी सत्य घटनायें सुनी, पढ़ी व जानी हैं जब चिकित्सक ने रोंगी को बिना बतायें उसकी किडनी निकाल ली और असत्य बात कह कर उसे समझाया गया कि उसके जीवन की रक्षा के लिए आपरेशन करना पड़ा। वह समय-समय पर दवा लेता रहे। यह घोर चारित्रक पतन का प्रमाण है एवं चारित्रिक प्रदूषण का उदाहरण है। यह सब समाज में चलता है क्योंकि हमारी दण्ड व्यवस्था में ऐसे अपराधियों को पकड़ने और शीघ्र दण्ड देने में समस्या है। चारित्रिक प्रदूषण के उदाहरण सभी व्यवसायों में देखने में आते हैं। यह सब आधुनिक शिक्षा की कमियों को उजागर करता है और उसे कलंकित करता है। ऐसा भी लगता है कि आधुनिक शिक्षा भ्रष्टाचार की पोषक है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मुख्यतः चारित्रिक व नैतिक दृष्टि से संस्कारित व चरित्रवान नागरिक उत्पन्न करना है। व्यवस्था में कमियाँ तो स्वीकार करनी ही पड़ेगीं। परन्तु दुःख इस बात का है इस रोग को अभी पहचाना ही नहीं गया है, उपचार कब होगा, होगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता।

अतः पर्यावरण की सुरक्षा व उसके खतरों का जब उल्लेख होता है तो उसे सभी पहलुओ से देखना उचित है। रोग पता होने पर ही समाधान हो सकता है। समाधान तभी होगा जब हममें रोग को रोग कहने व उसका उपचार करने की दृण इच्छा शक्ति होगी। कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता। असम्भव वहीं होता है जहां इच्छा शक्ति कमजोर होती है। आज अनेक मनुष्य पर्यावरण का शत्रु बने हुये है। शत्रुता को छोड़कर कर सभी को प्रकृति को अपना मित्र बनाना चाहिये और उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना चाहिये, इसी में सबकी भलाई है।

पता: 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
दूरभाष: 09412985121

thearyasamaj.org

झूठे इतिहास पर यूरोप ने लूटा 500 साल

– मोरेश्वर जोशी

पांच सौ से अधिक साल तक यूरोपीय लोगों ने संसार के कितने ही देशों पर गुलामी लादी, तरह-तरह के अत्याचार कर वहां लूट मचाई। विश्व के कई विचारक भले ही इसे उपनिवेशवाद कहें, लेकिन पूरे यूरोप की यही भावना थी और आज भी है, कि पूरे संसार को लूटने का यह अधिकार उसे इतिहास से ही प्राप्त हुआ है। हर एक देश का इतिहास होता है, उस इतिहास को इतिहासज्ञ की किसी कसौटी से तो गुजरना ही होता है। यूरोप को पूरे विश्व को पांच सौ वर्ष तक लूटने का जो इतिहास मिला था, वह उसे बाईबिल की एक काल्पनिक कथा के आधार पर मिला था। उसी काल्पनिक इतिहास का एक हिस्सा था वह झूठ कि 'आर्य यूरोप से भारत में आए।'

भारत में यह विषय पिछले अनेक वर्षों से विवाद का विषय माना गया है, लेकिन यह विषय केवल भारत तक सीमित नहीं है, अपितु अफ्रीका, दक्षिण एशियाई क्षेत्र के अन्य कई देशों, संपूर्ण प्राचीन अमरीका एवं आस्ट्रेलिया का भी इतिहास 'आर्य बाहर से यहां आए' जैसे कल्पित धरातल पर खड़ा है। 'ब्रेकिंग इंडिया' पुस्तक ने इस विषय को जिस खूबी से उजागर किया है, वैसा इससे पूर्व शायद ही कभी हुआ हो।

अनगिनत अत्याचार के कारण विश्व के अनेक देशों के लोगों के घाव अभी भी हरे हैं। विश्व के अनेक देशों की लूट एवं अत्याचार और अफ्रीका के संदर्भ में यही हुआ है। कम से कम तीन सौ वर्ष तक वहां जबरदस्त बंधुआ मजदूरी करने वाले गुलाम बनाए जाते रहे थे। वहां प्रतिकार होता तो उनके विरुद्ध शस्त्रों का प्रयोग कर उन्हें कब्जे में ले लिया जाता था। उस वक्त जितने गुलाम बने उनकी आज तक आंकी गई संख्या दो करोड़ है। इसमें भी नरसंहार का आंकड़ा स्वाभाविक रूप से अधिक होगा, ऐसा आज माना जा रहा है। यही चीज आस्ट्रेलिया एवं प्राचीन अमरीका में घटित हुई। उसे केवल खूनी कहना उचित नहीं होगा, महानरसंहार शब्द भी अपर्याप्त है।

विश्व का इतिहास बाईबिल की कथा 'नोहा की कहानी' पर आधारित है। यह कहानी है कि, दो हजार वर्ष ईसा पूर्व आए एक महाप्रलय में संपूर्ण विश्व डूब गया था, उसमें एक नाव में नोहा नामक लड़का बचा रहा। उस नाव में उसने और कुछ लोगो को बैठा लिया। इस नोहा नाम के लड़के से उनकी जो बातचीत हुई, उसी को इतिहास माना जाने लगा। हुआ यूं कि उसके तीन लड़कों में से हाम नामक लड़के ने अपने पिता नोहा को शराब के नशे में धुत घर में वस्त्रहीन स्थिति में पड़े देखा। इस पर वह अपनी हंसी को रोक नहीं पाया। इससे नोहा इतना क्रोधित हुआ कि उसने शाप दिया कि हाम की अगली पीढ़ियां काली होंगी, वे दक्षिण की ओर जायेंगी एवं उन्हें नोहा के दूसरे लड़कों, शेम और जेफेत की अगली पीढ़ियों की सेवा करनी होगी। यह नोहा आगे साढ़े नौ सौ साल जिया। इस दो लाईन की कहानी को यूरोप का इतिहास माना गया एवं विश्व के सभी काले लोग यानी यूरोपीय लोगों से विपरीत लोगों को हाम की पीढ़ी प्रजा माना गया और यूरोप की गुलामी स्वीकार करना उन्हें इतिहास से मिला अभिशाप माना गया। आगे हाम के दूसरे भाइयों शेम और जेफेत के वंशजों की टोलियां (कोलंबस और वास्को डी गामा से भी सदियों पूर्व) विश्व को जीतने के लिए निकलीं। उनमें से कुछ टोलियां भारत में आईं। उन टोलियों में थे शेम और जेफेत के वंशज यानी गोरे यूरोपीय और काले रंग वाले यानी सांवले लोग यानी हाम के वंशज थे।

इतिहास के किसी भी आधार से वंचित इस पूरी तरह से झूठी कथा के सहारे यूरोपीय लोगों ने 'सारा जग उनके पूर्वजों की दी हुई जागीर है', ऐसा न केवल माना बल्कि उसी के आधार पर पूरे विश्व का इतिहास रच डाला। इसी कारण भारत के हिस्से 'आर्य भारत में बाहर से आए' जैसा इतिहास आया। कई जगह देखा गया है किसी देश के इतिहास के बारे में दो मत हों। लेकिन हाम के लड़के और शेम और जेफेत के लड़कों को कहानी पर ही यूरोपीय लोगों ने पूरे विश्व का इतिहास बनाया, यही आज की वस्तुस्थिति है। वास्तव में इसे आसान बनाने के लिए 'आर्य बाहर से आए', जैसी कल्पनाएं रची गईं। यूरोप के अनेक देश, मुख्य रूप से इंग्लैंड, अमरीका और चर्च संगठनों ने इसी विषय को किन्हीं घटनाओं एवं वर्षों का रूप देकर अनेक विश्वविद्यालयों, संस्थाओं एवं उनके नियंत्रण वाले अनेक देशों की सरकारों की मदद से इसे इतिहास का रूप दे दिया। इसीलिए विश्व के कई देशों के अधिकृत इतिहास और स्कूली पाठ्यक्रम का वह हिस्सा बना। ऐसे बेबुनियाद इतिहास के कारण हमारा क्या नुकसान हुआ, इसका हम विचार कर सकते हैं। हमसे अधिक गंभीर परिणामों एवं उससे होने वाले अनगिनत अत्याचार के कारण विश्व के अनेक देशों के लोगों के घाव अभी भी हरे हैं। विश्व के अनेक देशों की लूट एवं अत्याचार और अफ्रीका के संदर्भ में यही हुआ है। कम से कम तीन सौ वर्ष तक वहां जबरदस्त बंधुआ मजदूरी करने वाले गुलाम बनाए जाते रहे थे। वहां प्रतिकार होता तो उनके विरुद्ध शस्त्रों का प्रयोग कर उन्हें कब्जे में ले लिया जाता था। उस वक्त जितने गुलाम बने उनकी आज तक आंकी गई संख्या दो करोड़ है। इसमें भी नरसंहार का आंकड़ा स्वाभाविक रूप से अधिक होगा, ऐसा आज माना जा रहा है। यही चीज आस्ट्रेलिया एवं प्राचीन अमरीका में घटित हुई। उसे केवल खूनी कहना उचित नहीं होगा, महानरसंहार शब्द भी अपर्याप्त है।

जहां तक भारत का प्रश्न है, ब्रिटिशों द्वारा की गई प्लासी की लूट एवं मराठा साम्राज्य में की गई लूट की जो थोड़ी जानकारी उपलब्ध है, वह कुछ लाख करोड़ रुपयों की है। एक लूट के सहारे ब्रिटिशों ने ब्रिटेन का औद्योगिकरण किया एवं दूसरी लूट के सहारे सेना को आधुनिक बनाया। बाकी लूट का हिसाब अभी उजागर नहीं हुआ है। यह संदर्भ देने का कारण यही है कि जेफेत और शेम के वंशजों को मिले अधिकार के आधार पर काले हाम के वंशजों की लूट विश्व के दो सौ देशों में पांच सौ वर्ष तक चलती रही थी। आज भी वह जारी है। यूरोप में जो मान्यता है कि नोहा की अनुमति से यह सब चलता है, इस बारे में जो इतिहास उपलब्ध है, वह पांच सौ वर्ष तक संसार को लूटने वाले यूरोपीय देशों के इतिहासकारों ने ही लिखा है। चाहे जितना भी मानें कि उन्होंने ये बिना किसी पूर्वाग्रह से लिखा है, फिर भी एक बात तो तय है कि आज वह संपूर्ण इतिहास फिर से लिखे जाने की आवश्यकता है।

'आर्यों को भारत से भेजने' वाला इतिहास यूरोपीय लोगों ने किस संस्था से कैसे लिखवाया, इसका भी इतिहास उपलब्ध है। अगर सन् 1950 को विश्व के अनेक देशों के यूरोपीय लोगों की जकड़ से मुक्त होने का मध्य वर्ष माना जाए, तो उसके पहले पांच वर्ष एवं बाद के पांच वर्ष पूरे विश्व को स्वतंत्रता की रोशनी देखने का अनुभव मिला। फिर भी पिछले साठ वर्ष में यूरोपीय देश एवं यूरोपीय नींव पर खड़े अमरीकी देशों का ही विश्व के अर्थतंत्र पर वर्चस्व है। यद्यपि पिछले साठ वर्ष में भारत सहित अनेक देशों ने अपने इतिहास का पुनर्लेखन शुरू किया है। 'ब्रेकिंग इंडिया' पुस्तक ने इस प्रक्रिया को अनेक स्थानों पर गतिमान बनाया है। यह प्रक्रिया जितनी अधिक प्रभावी होगी, उसी अनुपात में शेम और जेफेत का अधिकार प्राप्त होने वालों के भी कुछ मुद्दे सामने आयेंगे। लेकिन अब उनका सामना तो करना ही होगा।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद यहां की सरकारों को अपना अस्तित्व टिकाये रखने हेतु शेम और जेफेत की बाहें पकड़ने वालों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। लेकिन वह कल्पित इतिहास धूमिल होने के लिए जितना समय लगेगा, वह उतना ही उन महासत्ताओं को यहां सत्ता जमाने का फिर से अवसर देने जैसा होगा।

– पांचजन्य से साभार

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

ममत्व, मातृत्व और सतर्कता

– डॉ. जसवन्त राय सहगल

आज हमारे बच्चे हमसे अधिक समझदार, बुद्धिमान एवं चतुर हैं। किन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि उन्हें नैतिकता या नैतिक मूल्यों का कोई ज्ञान नहीं। यही कारण है, उनके पथभ्रष्ट होने का। परिणामत: उनके मन में प्रसन्नता का अभव रहता है। सदा भय, चिन्ता, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, हिंसा आदि के भाव बने रहते हैं और वे अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार, अपने को संसार में अकेला और हताश समझने लगते हैं। उनका किसी कार्य में मन नहीं लगता और किसी छोटी-मोटी असफलता होने पर अथवा आपसी कहा-सुनी होने पर आत्महत्या की ओर प्रेरित हो जाते हैं अथवा दूसरे की हत्या कर देते हैं और माता-पिता को पता भी नहीं चलता।

ममत्व शब्द संस्कृत की मम् धातु से बना है, जिसका अर्थ है मेरा या मेरे से सम्बन्धित। प्रत्येक गृहिणी का एक सपना होता है कि वह मां बने और उसे मां कहने वाला कोई उसका अपना हो, जिसको उसने नौ मास तक अपनी कोख में रखकर, अपने रस रक्त से पुष्ट कर, उचित समय पर भूमिष्ठ किया हो, अर्थात् जन्म दिया हो। उस बच्चे के जन्म के साथ ही ममत्व व मातृत्व का जन्म होता है और पुलकित व प्रफुल्लित होता है। तब वह स्त्री अपना पूरा प्यार, उस बच्चे पर उडेल देती है। उसकी देखभाल, लालन-पालन, खानपान, सम्भाल आदि में अपना सारा समय लगा देती है। बच्चे की एक आवाज या चीख उसे विचलित कर देती है। वह उसे दु:ख में नहीं देख सकती। यदि वह बच्चे से दूर भी हो, तो उसका ध्यान सदा बच्चे में ही रहता है। वह बच्चे की कुशलता व स्वास्थ्य के प्रति सदा सतर्क रहती है और उसके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहती है। उसके भविष्य के बारे में सोचकर चिन्तित हो उठती है और कामना करती है उसके स्वास्थ्य व उज्ज्वल भविष्य की। यही है प्यार, मोह, ममत्व, अपनत्व, जो बच्चे के विकास के लिए परमावश्यक है। यह तभी संभव है जब स्त्री गृहलक्ष्मी या गृहिणी हो। उसका अपना व्यक्तिगत कोई कैरियर न हो। ऐसी अवस्था में बच्चे को माँ के साथ अपने पिता का प्यार भी भरपूर मिलता है और बच्चा दोनों की छत्रछाया में विकसित होता है। ऐसे बच्चे भाग्यशाली होते हैं जिनको माता-पिता दोनों का प्यार मिलता है।

दूसरी ओर, जहां पति-पत्नी दोनों कामकाजी हों और वे दोनों अपने कैरियर के प्रति सजग हों और उसमें उन्नति कर आकाश को छूना चाहते हों, वहां भी स्त्री को माँ बनने की चाह रहती है और समय पर माँ बनती है किन्तु अपने कैरियर के कारण, बच्चे के लिए समय नहीं निकाल पाती। यद्यपि वह भी उसे प्यार करती है। ऐसी अवस्था में बच्चे के पालन-पोषण, देखभाल के लिए किसी अन्य स्त्री या किराए की धाय की आवश्यकता होती है। क्या वह स्त्री या धाय बच्चे की देखभाल, पालन-पोषण, खान-पान तथा स्वच्छता का ध्यान रख पाती है?क्या वह बच्चे के स्वास्थ्य व कुशलता के प्रति सजग है?क्या वह पूरा समय बच्चे को दे पाती है?क्या वह पूरा ध्यान बच्चे पर केन्द्रित रखती है। ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर सकारात्मक नहीं, परिणाम गम्भीर हो सकते हैं। बच्चे का कम तथा अधूरा भोजन (Malnutrition) के कारण, उसका दुर्बल व रोगी शरीर तथा अधूरा विकास। जहां स्त्रियां सरकारी नौकरी में हैं वहां उन्हें कई प्रकार की सुविधायें यथा मैटर्निटी लीव बच्चे के पालन-पोषण के लिए अवकाश (5 वर्ष तक), कार्यालय में क्रेच आदि प्राप्त हैं और वे अपनी ड्यूटी करते हुए भी बच्चे के प्रति अपना कर्त्तव्य निभा सकती हैं। किन्तु जहां स्त्रियां अपने कैरियर के प्रति अधिक सजग हैं और उन्हें आवश्यकता से अधिक समय अपनी कार्यशाला में बिताना पड़ता है वहां बच्चे के लिए उनके पास कोई समय नहीं रहता।

उचित समय पर, दो-अढ़ाई वर्ष की आयु में बच्चे को किसी अच्छे प्लेस्कूल में प्रविष्ट करा दिया जाता है। यद्यपि वहां बच्चों की उपस्थिति में उसे कुछ अच्छा लगता है। किन्तु वहां भी वह अपनी मां को भुला नहीं पाता। वहां तीन-चार घण्टे बिताने के बाद जब वह घर आता है तो उसे मां के स्थान पर वही धाय मिलती है, तो वह दुखी होता है और अवसाद में चला जाता है। कई बार, विद्रोही हो खाना-पीना छोड़ देता है और धाय के कोप का भाजन बनता है।

ऐसा क्यों होता है, क्योंकि उन्हें नैतिक शिक्षा नहीं दी गई। नैतिक मूल्यों का ज्ञान नहीं। धर्म के प्रति रुचि नहीं। आपस में भ्रातृभाव नहीं। पारिवारिक सम्बन्धों को जाना नहीं। अपनी सभ्यता संस्कृति से प्रेम नहीं। भगवान में श्रद्धा-विश्वास नहीं। कानून का डर नहीं।

समय बीतता जाता है। पांच वर्ष की आयु में उसे किसी अच्छे स्कूल में प्रविष्ट कर, उत्तम शिक्षा की व्यवस्था कर दी जाती है। बच्चे की बढ़त के साथ उसकी रुचियाँ बदलने लगती हैं। उसे अब धाय की आवश्यकता नहीं। आरम्भ में उसे किसी डे हॉस्टल में दिन बिताने की व्यवस्था कर दी जाती है और समय बीतने के साथ, वह अपना समय घर पर बिताना चाहता है। उसकी इच्छानुसार ऐसी व्यवस्था कर दी जाती है।

समयान्तर से बच्चा बाल्यावस्था से किशोरावस्था में पदार्पण करता है। उस समय उसकी सोच व मानसिकता बदलने लगती है। उस समय बच्चे पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यह

समय तेरह से उन्नीस वर्ष की अवस्था के बीच का होता है, जिसे अंग्रेजी में Teens कहते हैं। यह समय जीवन का ऐसा दोराहा होता है जहां बच्चे का दिशानिर्देश होना आवश्यक होता है। अन्यथा उसके पथ-भ्रष्ट होने का भय रहता है।

मीडिया (प्रिन्ट इलैक्ट्रोनिक जिसमें आडियो-विडियो सब सम्मिलित है) में दृश्यों का बच्चे के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है और कुसंगति के कारण वे भटक जाते हैं। उसके माता-पिता अपनी व्यस्तता के कारण, उस पर कोई ध्यान नहीं दे पाते और उसे संतुष्ट व शान्त रखने के लिए अपने धन का सहारा लेते हैं और उसे आवश्यकता से अधिक धन देते हैं, जिसे वह अपनी इच्छानुसार अपनी रुचियों पर खर्च कर सके और यह जानने का कभी प्रयत्न नहीं करते कि वह किस प्रकार की वस्तुओं पर खर्च करता है?दिन में क्या करता है?कौन-सी क्रीड़ाओं में भाग लेते हैं?उसकी संगति कैसे बच्चों के साथ है?क्या वह अपनी पढ़ाई में चुस्त-दुरुस्त है?क्या उसका रिपोर्टकार्ड संतोषजनक है?क्या उसका व्यवहार परिवार में सामान्य है, घर में अपने क्रोध का प्रदर्शन तो नहीं करता?क्या वह उचित समय पर सोता और जागता है?क्या वह अधिक समय टी. वी. व कम्प्यूटर (विडियो गेम तथा फेसबुक) पर तो खर्च नहीं करता?क्या वह किसी व्यसन में तो नहीं पड़ गया?क्या वह अपनी इच्छाओं को मूर्तरूप देने के लिए समाज विरोधी गतिविधियों में भाग तो नहीं ले रहा?क्या वह उचित समय पर अपना भोजन करता है?क्या वह खाद्याखाद्य का ध्यान रखता है?क्या वह अपना अकेलापन दूर करने के लिए गुटखा, मद्य या ड्रग्स का सहारा तो नहीं ले रहा?

ऐसे बच्चे अपने माता-पिता के लिए समस्या बन जाते हैं। वे उद्दण्ड, दुस्साहसी एवं सुस्त हो जाते हैं। उनकी स्मरणशक्ति मंद पड़ जाती है और वे "कुछ भी" करने के लिए तैय्यार रहते हैं, किन्तु एक विशेष मूल्य पर। उनके मन में किसी के प्रति दया नहीं होती और न ही सम्मान की भावना। भले ही वे उनके माता-पिता ही क्यों न हों। वे अपने को राजकुमार, सर्वशक्तिमान् एवं समाज से ऊपर समझने लगते हैं और चाहते हैं कि सब उनका सम्मान करें। उनका रहन-सहन एवं खर्च एक विशेष सीमा से अधिक होता है। माता-पिता द्वारा दिया गया धन, उनकी छोटी-मोटी आवश्यकताओं में पूरा हो जाता है, किन्तु दुर्व्यसनों में पड़ने के कारण अन्य खर्च पूरे नहीं होते और प्यार न मिलने के कारण, अपने बढ़ते हुए खर्च को पूरा करने के लिए, वे समाजविरोधी गतिविधियों यथा लूट-खसूट, चोरी, डाका, अपहरण कर फिरौती प्राप्त करना, सुपारी, हत्या आदि में लिप्त हो जाते हैं। कभी किसी लड़की का बलात्कार भी कर देते हैं। जब ये तथ्य माता-पिता के सामने आते हैं, तो बहुत देर हो चुकी होती है। उस अवस्था से पूर्वावस्था में आना लगभग असम्भव होता है। यदि बच्चे को ड्रग्स लेने की आदत हो गई है तो स्थिति और भी भयावह होती है। परिणाम शुभ नहीं होता। बहुधा उसकी मृत्यु हो जाती है अथवा वह आत्महत्या कर लेता है और यदि उसे De-Addiction की सुविधा आरम्भ में ही प्राप्त हो जाये, तो थोड़े सुधार की आशा की जा सकती है।

इसका श्रेय जाता है हमारी जीवनशैली, स्कूली-शिक्षा व्यवस्था तथा मीडिया (प्रिन्ट व इलैक्ट्रोनिक, जिसमें आडियो व विडियो भी सम्मिलित है) को। मीडिया (टी. वी., इण्टरनेट, फेसबुक, सिनेमा आदि) में सब कुछ अच्छा, बुरा दिखलाया जाता है और उसका प्रभाव बच्चे के मन-मस्तिष्क में अंकित हो जाता है और वे अपनी अपरिपक्व बुद्धि के कारण उन दृश्यों को मनोरंजन एवं सत्य समझते हैं और उनके विचार मलिन हो जाते हैं और वे कई दुर्व्यसनों से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार, उन दृश्यों को देखकर, वैसे ही स्टंट करने का प्रयास कर हानि उठाते हैं और कभी-कभी उन प्रक्रियाओं से मृत्यु भी हो जाती है। स्मरण रहे कि मीडिया में दिखाये गये दृश्यों का हमारे वास्तविक जीवन से कुछ लेना-देना नहीं होता। वे मात्र मनोरंजन के नाम पर दिखाये जाते हैं।

आज हमारे बच्चे हमसे अधिक समझदार, बुद्धिमान एवं चतुर हैं। किन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि उन्हें नैतिकता या नैतिक मूल्यों का कोई ज्ञान नहीं। यही कारण है, उनके पथभ्रष्ट होने का। परिणामत: उनके मन में प्रसन्नता का अभव रहता है। सदा भय, चिन्ता, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, हिंसा आदि के भाव बने रहते हैं और वे अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार, अपने को संसार में अकेला और हताश समझने लगते हैं। उनका किसी कार्य में मन नहीं लगता और किसी छोटी-मोटी असफलता होने पर अथवा आपसी कहा-सुनी होने पर आत्महत्या की ओर प्रेरित हो जाते हैं अथवा दूसरे की हत्या कर देते हैं और माता-पिता को पता भी नहीं चलता।

ऐसा क्यों होता है, क्योंकि उन्हें नैतिक शिक्षा नहीं दी गई। नैतिक मूल्यों का ज्ञान नहीं। धर्म के प्रति रुचि नहीं। आपस में भ्रातृभाव नहीं। पारिवारिक सम्बन्धों को जाना नहीं। अपनी सभ्यता संस्कृति से प्रेम नहीं। भगवान में श्रद्धा-विश्वास नहीं। कानून का डर नहीं।

सारांश कि हमें केवल बच्चों को जन्म ही नहीं देना होता, अपितु उन्हें शक्तिशाली, सुसंस्कृत, सुशिक्षित एवं सभ्य नागरिक बनाना होता है। जो परिवार व समाज के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकें और देश के उत्थान में योगदान दे सकें। इसके लिए माता-पिता दोनों को अथवा एक को बच्चों पर पूरा ध्यान देना होगा, तभी कुछ सुधार की आशा हो सकती है।

– सेवा सदन, सी-5ए-254, जनकपुरी, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य चर्चा

जल चिकित्सा : एक चमत्कार

– आयुर्वेदशिरोमणि डॉ. मनोहर दास अग्रावत एन. डी.

जल शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं के लिए प्रत्यक्षतः जिम्मेवार होता है, जीवन के लिए जरूरी आधारभूत पोषक तत्त्वों का वाहक भी जल ही होता है, इतना ही नहीं जल शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा पूर्णतः भारतीय चिकित्सा पद्धति है, इसमें वायु, जल, मिट्टी तथा धूप के माध्यम से रोगों का उपचार किया जाता है। इसकी उपयोगिता को देखकर वैदेशिक विद्वानों ने इसे खूब अपनाया। यूनान, अरब, जर्मनी, इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों में इसका खूब प्रचार-प्रसार भी हुआ, परन्तु लुईकुने के आविर्भाव से पूर्व प्राकृतिक चिकित्सा जिसका प्रमुख अंग जल-चिकित्सा है का वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित विकास नहीं हो पाया था। लुईकुने जर्मनी के नागरिक थे और उन्होंने 10 अक्टूबर, 1983 में अपना नेचर क्योर (प्राकृतिक चिकित्सालय) खोल दिया था। उन्होंने जल चिकित्सा पर विशेष जोर दिया। स्नान की विभिन्न विधियाँ - भाप स्नान, कटिस्नान, मेहन स्नान आदि खोज निकाली और आगे फिर उसका विस्तार होता गया।

प्रकृति में वायु के बाद जल का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। पृथ्वी पर 3/4 भाग जल एवं केवल 1/4 भाग थल (जमीन) है। प्राकृतिक चिकित्सा विधि में जल का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। हमारी शारीरिक रचना में भी जल की विपुलता है। शरीर के वजन का 2/3 भाग जल एवं सिर्फ 1/3 भाग ठोस है। दांत को शरीर का सबसे ठोस पदार्थ कहा जा सकता है, इसमें 10 प्रतिशत जल का अंश है, शरीर के अन्य भाग की हड्डियों में 18 प्रतिशत से अधिक जलीय अंश रहता है। मनुष्य की आयु वृद्धि के साथ-साथ शरीर के जलीय अंश में किंचित् कमी एवं ठोस अंश में थोड़ी वृद्धि होने लगती है। बच्चों तथा जवानों में ठोस की अपेक्षा जलीय अंश अधिक होता है।

हमारी दैनिक खुराक में जिसको हम ठोस वस्तु मानते हैं, उसमें भी 50 से 60 प्रतिशत जलांश रहता है। इसके अतिरिक्त जल या अन्य पेय के रूप में शरीर को जल की आवश्यकता रहती है। इस प्रकार शरीर में जल की विपुलता के कारण दैनिक आहार, स्नान तथा स्वच्छता आदि में जल का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है।

जलोपचार (जल धौती, एनिमा, वाष्प स्नान, जल की पट्टियाँ, लपेट तथा स्नानादि) द्वारा निम्नलिखित हेतु सिद्ध किए जाते हैं :-

1. आमाशय साफ करना।
2. बड़ी आंत, मलाशय आदि से मल निकालकर उनको साफ करना।
3. अधिक जल पीकर मूत्राशय मार्ग से जल निकालकर उसको स्वस्थ करना।
4. शरीर के अंगों को तथा त्वचा को साफ करना, चर्म छिद्र (रोम छिद्र) खुले एवं साफ रखना, जिससे रक्त के विजातीय द्रव्य आसानी से बाहर निकल सकें।
5. बुखार की अवस्था में बढ़े हुए शारीरिक ताप को कम करना एवं ठण्ड लगने पर उसमें उष्णता पैदा करना।
6. सब अंग-प्रत्यंगों में रक्ताभिसरण प्रमाण में रखना एवं रक्ताभिसरण क्रिया में आवश्यक वृद्धि करना।
7. आकस्मिक चोट या अन्य कारणों से एक ही स्थान में अधिक रक्त संचित होने पर वहां पर भार तथा वेदना कम करना।

जल भी एक दवा है :-

हमारे शास्त्रों में लिखा है :- **अर्जीर्णे भेषजं वारि जीर्णे-वारि बलप्रदम्।** अर्थात् अजीर्ण में जल दवा का काम करता है और भोजन पचने के बाद जल पीने से शरीर को बल प्रदान करता है। बहुत से रोगों में यह दवा का काम करता है। ठण्डे और गरम जल में अलग-अलग औषधीय गुण होते हैं। कई रोगों में ठण्डा जल और कई रोगों में गरम जल दवा का काम करता है। यदि धूप में निकलने से पहले पानी पी लिया जाए तो लू कभी नहीं लगती। लू शरीर में पानी के अभाव के समय लगती है। बाहर देर तक रहना पड़े, तो बीच में अवश्य ही पानी पीना चाहिए।

आग से झुलसने पर जले अंगों को ठण्डे जल में कम से कम एक घंटा डुबोकर रखना चाहिए, इससे शांति मिलेगी, जलन दूर होगी और घाव या फफोला नहीं होगा। यदि पूरा शरीर जल जाए, तो तुरन्त उसको बड़े जल के हौज या तालाब में डूबो दें, सांस लेने के लिए नाक को जल से बाहर रखें। यह याद रखें कि झुलसा अंग जल में एक या दो घंटे डूबा रहे। उस पर पानी नहीं छिड़कना चाहिए, इससे हानि होती है। इसी तरह हाथ या पैर में मोच आ जाने पर या चोट लगने पर तुरंत उस स्थान पर ठण्डे जल की पट्टी लगा देनी चाहिए। चोट या मोच के स्थान पर बर्फ भी लगा सकते हैं। इससे न तो सूजन होगी न दर्द बढ़ेगा। अगर गरम जल की पट्टी लगायेंगे या सेंक करेंगे, तो सूजन आ जायेगी और दर्द बढ़ जायेगा। यदि चोट लगने या कटने से खून आ जाए, तो टिटनेस का इंजेक्शन लगवाने के बाद ठण्डे जल की पट्टी लगाएं या बर्फ से सेक करें।

गरम जल का लाभ वात रोगों, जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, घुटने का दर्द, गठिया, कंधे की जकड़न में होता है, इसमें गर्म जल या भांप का सेंक दिया जाता है।

यदि रात में नींद नहीं आती तो सोने के पहले दोनों पैरों को घुटनों तक सहने योग्य गरम जल से भरी बाल्टी या टब में पंद्रह मिनट डुबाए रखें, इसके बाद पैरों को बाहर निकालकर पोंछ लें और सो जाएं, नींद आ जायेगी। यह ध्यान रखें कि जब गरम पानी में पैर डुबाएं, तब सिर पर ठण्डे पानी में भिगोकर निचोड़ा हुआ तौलिया अवश्य रखें।

रात में गरम जल पीने से बढ़ी वायु नष्ट होती है, जिससे अनावश्यक रूप से बढ़ी हुई चर्बी आदि से सहज ही मुक्ति मिल जाती है तथा पेट, जांघों आदि पर चर्बी जमना बंद हो जाता है। अजीर्ण, अपच, अफारा, कब्ज इत्यादि उदर विकार, जैसे बलगम बनना, कॉलेस्ट्रोल (एल. डी. एल.) बढ़ना, नजला बना रहना, सिरदर्द होना जैसे विकारों से मुक्ति मिलती है, नियिमत रूप से गरम जल रात में पीते रहना चाहिए।

उबालकर ठण्डा किए पानी को पीने से वायु गोला, बवासिर (पाइल्स), क्षय, उदररोग (एसाइटिस), सूजन, पेट की अग्नि की मंदता, बुखार, विविध नेत्र रोग, वायुरोग, भोजन के प्रति रुचि न होना, अतिसार (डायरिया), नजला, जुकाम इत्यादि बीमारियाँ दूर होती हैं।

गरम जल पीने से आमाशय और आंतों में गति पैदा होती है। फलःस्वरूप पेट में रुका हुआ आहार आंतों में जाकर पच जाता है। चरक संहिता के अनुसार वायु-कफ जनित और वात जनित ज्वर में प्यास लगने पर ऊष्ण जल दिया जाना चाहिए। ज्वर में गरम जल पिलाने की बड़ी महिमा है। इससे रोगी की पेट और आंतों की बढ़ी हुई वायु सुगमतापूर्वक खारिज हो जाती है, पिया गया जल हल्का होने के कारण शीघ्र पच जाता है, अल्प मात्रा में पिया गया जल प्यास को शांत करता है, जठराग्नि प्रज्ज्वलित होती है और कफ आसानी से सूख जाता है, बुखार की उस अवस्था में जब रोगी के शरीर में जलन हो रही हो, चक्कर आ रहे हों, रोगी अंट-शंट बोल रहा हो, तो गरम जल नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि गरम जल से ये लक्षण बढ़ने लगते हैं, गरमी (पित्त) के कारण होने वाले दस्तों में भी गरम जल वर्जित है। दिन में उबला जल रखे-रखे ही रात को भारी हो जाता है, इसी प्रकार रात के समय उबला जल सवेरे तक भारी हो जाता है, अतः दिन का उबला हुआ जल रात में और रात का उबला हुआ जल दिन में नहीं पीना चाहिए। सदा ताजा उबालकर ठण्डा किया हुआ जल ही पीएं।

भोजन के बाद एक गिलास गरम जल पीने से मोटापा कम होता है, शरीर संतुलित, स्वस्थ एवं सबल होने लगता है, गर्मियों में यह प्रयोग न करें।

जिस जल में ईंट के टुकड़े को आग में गरम करके बुझाया गया हो, वह जल शरीर के समस्त दोषों का हरण करता है। जल शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं के लिए प्रत्यक्षतः जिम्मेवार होता है, जीवन के लिए जरूरी आधार भूत पोषक तत्त्वों का वाहक भी जल ही होता है, इतना ही नहीं जल शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है, शरीर से जल का निकास मुख्य रूप से पसीने और मूत्र विसर्जन आदि के रूप में होता है, लिहाजा शरीर से निकास की आवश्यक मात्रा को बनाए रखने के लिए जल का भरपूर सेवन अत्यावश्यक है।

- मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा, पो. तारापुर (जावद)-458330, जिला-नीमच (म. प्र.)

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी चार दिवसीय वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ दिनांक 1 जून, 2014 को सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा पद पर आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी विराजमान रहे। चारों दिन उनके सामाजिक और आध्यात्मिक विषयों पर सारगर्भित प्रवचन होते रहे।

समापन दिवस को दिल्ली प्राप्त के सभी वैदिक पुरोहितों को डॉ. प्रेमपाल शास्त्री और आचार्य मेघश्याम के नेतृत्व में सम्मानित किया गया साथ ही स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती व आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रीय जी को भी शॉल, नारियल और नकद धनराशि देकर सम्मानित किया गया।

ग्रेटर कैलाश-1 की आर्य समाज एक प्रगतिशील आर्य समाज है यहां पर वैदिक पाठशाला और चेरिटेबल चिकित्सालय का संचालन सुचारू ढंग से होता है और साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन होता रहता है। *- डॉ. प्रेमपाल शास्त्री, अध्यक्ष पुरोहित सभा, दिल्ली*

thearyasamaj.org

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ती पर भजन संध्या एवं सम्मान समारोह

अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका द्वारा पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती के अवसर पर स्वस्ति महायज्ञ, विराट भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्य समाज बी-ब्लॉक, जनकपुरी में किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि विधायक एवं दिल्ली सरकार के पूर्व वित्तमंत्री डॉ. जगदीश मुखी, दक्षिण दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री खुशीराम एवं मुख्यवक्ता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया थे। कार्यक्रम का संयोजन अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। अध्यात्म पथ के प्रधान संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि पं. रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान क्रांतिकारी, अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी व उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषा-भाषी, इतिहासकार व साहित्यकार थे। उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि आर्य समाज से जुड़कर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने देशभक्ति का पाठ पढ़ा और देश पर बलिदान हो गये। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। डॉ. जगदीश मुखी ने कहा कि जो जहाँ बैठा है वह वहाँ ईमानदारी से अपना काम करें, यही बिस्मिल के जीवन से सच्ची सीख होगी। सभी वक्ताओं ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के अभूतपूर्व त्याग, बलिदान एवं साहित्यिक योगदान को याद किया तथा उनके जीवन से देशभक्ति की भावना के अनुकरण एवं अध्यात्म पथ पर चलने की प्रेरणा दी।

भजन सम्राट श्री भारतेन्द्र मासूम ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के गीतों एवं भजनों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया।

इस समारोह में यशस्वी लेखक डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित करते हुए प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिन्ह एवं शॉल भेंट की। अध्यात्म रत्न सम्मान से सर्वश्री कन्हैयालाल आर्य, विजयगुप्त, चन्द्रकान्ता, अमर सिंह आर्य को सम्मानित किया गया तो विद्यासागर नांगिया स्मृति सम्मान से हरबंशलाल कोहली एवं प्रेमसागर नांगिया को। खचाखच भरे सभागार में सर्वश्री यशपाल आर्य (चेयरमैन एवं निगमपार्षद) विद्यासागर वर्मा (पूर्व राजदूत कजाख़स्तान) सरिता जिन्दल (पूर्व निगम पार्षद) संजीव तोमर (कनाडा से पधारे) मेथ्यू श्रुहान (अमेरिका से पधारे) अरूण सहारन (उद्योगपति) प्रो. अरूण आर्य (अध्यक्ष कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट) वेद प्रकाश (प्रधान, आर्य समाज विकासपुरी), शिव कुमार मदान (दिल्ली) श्री अभय सिन्हा एवं अनेक पत्रकार तथा विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही।

सभी अभ्यागतों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने कहा कि संसार में अभिमानी व्यक्ति महान नहीं होते और महान व्यक्ति अभिमानी नहीं होते। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री भारतभूषण साहनी ने की। भव्य ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

- सूर्यकान्त मिश्रा, प्रबंध सम्पादक

प्रवेश सूचना

सुरम्य वातावरण में योग्यतम अध्यापकों द्वारा अध्यापन एवं छात्रावास की उत्तम व्यवस्था से युक्त "आर्य गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद में प्रवेशिका से आचार्य (एम.ए.) पर्यन्त कक्षाओं में योग्यता परीक्षा के आधार पर प्रवेश प्रारम्भ हैं। छात्र की आयु 8 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित समस्त विषय सम्मिलित हैं। *- प्राचार्य, मो.:-9412266960, 9411439741*

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का निर्वाचन

श्री अशोक सहगल	-	प्रधान
श्री सतीश चन्द्र मेहता	-	मन्त्री
श्री सतीश कुमार	-	कोषाध्यक्ष

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, ओंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

NDPSo on 11/12 जुलाई, 2014
प्रकाशन की तिथि : 10 जुलाई, 2014
वैदिक सार्वदेशिक 10 से 16 जुलाई 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्राणाय नमो नमः

नमस्ते अस्त्वायते नमो अस्तु परायते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत आसीनायोत ते नमः।।

—अथर्व० ११/४/७

ऋषिः—भार्गवो वैदर्भिः।। देवता—प्राणः।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हे प्राण ! मैं सदा आते–जाते तुझ पर दृष्टि रखता हूँ। तेरी आने और जाने की गति के साथ अपनी मनोवृत्ति को लाता और ले–जाता रहता हूँ। बल्कि तेरे आने–जाने के साथ 'ओ३म' का जप करता जाता हूँ। इस तरह दिन–रात के चौबीसों घण्टों में तेरा जो इक्कीस हज़ार छह सौ बार आना–जाना होता है उसके साथ मेरे इतने ही अजपा–जप होते जाते हैं। इस साधना के शुरू करने से तू ठहरने लगता है और कभी–कभी स्वयमेव कुछ समय के लिए ठहरा भी रहता है। एवं, तेरा स्वाभाविक अनुसरण करने में मेरे चारों प्रकार के प्राणायाम भी सिद्ध हो जाते हैं। तेरे आने में बाह्यवृत्ति (रेचक) प्राणायाम होता है, तेरे जाने में आभ्यन्तरवृत्ति (पूरक) प्राणायाम होता है, ठहरने में स्तम्भवृत्ति (कुम्भक) प्राणायाम होता है और स्वयमेव ठहर जाने में चौथा बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी प्राणायाम हो जाता है। मैं तो हठयोग के प्राणायाम की क्रियाओं के झगड़े में नहीं पड़ता, किन्तु आते–जाते, ठहरते और ठहरे हुए तुझे, हे प्राण ! सदा नमस्कार करता जाता हूँ। बस, इसी से मुझे सब प्राणायामों का फल मिल जाता है। मैं मुझे तेरी सब स्थितियों में और सब कालों में नमस्कार ही करता हूँ। सदा तेरे सामने झुकता हूँ। कभी तुझे अपनी इच्छानुसार झुकाने की घातक चेष्टा नहीं करता। तू जो अपने सहज–स्वभाव से मुझमें चल रहा है, उसी के अनुसार मैं अपने–आपको झुकाता जाता हूँ, उसी के अनुसार अपने जीवन को सञ्चालित करता जाता हूँ, किन्तु कभी अपनी सहूलियत के अनुसार तुझे मोड़ने की, परिवर्तित करने की अक्षम्य मूर्खता नहीं करता। हे प्राण ! मैं तो आते हुए तुझे नमस्कार करता हूँ, जाते हुए तुझे नमस्कार करता हूँ, ठहरते हुए तुझे नमस्कार करता हूँ और ठहरे हुए, बैठे हुए, तुझे नमस्कार करता हूँ।

शब्दार्थ—प्राण=हे प्राण ! आयते=आते हुए ते=तुझे नमः अस्तु=नमस्त्कार हो ! परायते=जाते हुए तुझे नमः अस्तु=नमस्कार हो। तिष्ठते=ठहरे हुए ते=तुझे नमः=नमस्कार करता हूँ उत=और आसीनाय=बैठे हुए, स्थिर हुए–हुए ते=तुझे नमः=नमस्कार करता हूँ।

साभार– 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रान्तीय आर्य युवा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

जयपुर : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के आह्वान पर आर्य समाज, जयपुर (दक्षिण) के तत्वावधान में स्थानीय जी. एल. सैनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग के प्रांगण में 16 से 22 जून तक आर्य युवा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न हुआ।

16 जून, 2014 को शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर के अधिष्ठाता एवं सांसद सीकर स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने किया। स्वामी सुमेधानन्द ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे शिविरों के माध्यम से ही संयमित एवं अनुशासित पीढ़ी का निर्माण होता है। केन्द्रीय सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान् आर्य युवा ही भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण मूल्यों की पुनर्स्थापना कर सकेंगे।

25 युवा शिविरार्थियों को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास हेतु आसन, जूडो-कराटे, मार्शल आर्ट, सैनिक शिक्षा व लाठी प्रचालन का प्रशिक्षण, निपुण प्रशिक्षक गण सर्वश्री रामकृष्ण शास्त्री, हेमन्त, रामबाबू आर्य व हिमांशु के निर्देशन में हुआ। समापन सत्र में प्रशिक्षित युवाओं ने आसन, लाठी परिचालन, पुल एवं स्तूप निर्माण, जूडो-कराटे आदि विद्याओं का प्रदर्शन किया जिन्हें उपस्थित दर्शकगण ने करतल ध्वनि से सराहा। अनुशासन, भाषण, अन्त्याक्षरी, निबन्ध लेखन, वैदिक प्रश्नोत्तरी, गीत-कविता आदि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मंचस्थ विद्वज्जनों ने पुरस्कृत किया।

समापन सूत्र के आरम्भ में शिविर अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष यशपाल 'यश' ने आयोजन की भूमिका एवं औचित्य पर प्रकाश डाला। शिविरार्थियों के उत्साहवर्धन के लिए उपस्थित समागम का आभार प्रकट किया। सर्वश्री प्रो. एच. सी. एल. गुप्ता, एम. एल. गोयल, सत्यव्रत सामवेदी, धर्मपाल आर्य, डॉ. गोविन्द सैनी एवं अन्य महानुभावों ने समापन सत्र को संबोधित किया। नगर के सभी आर्य समाजों का प्रतिनिधित्व एवं योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा।

मधुर भजन प्रस्तुतियों से श्रीमती सुधा मित्तल, श्रीमती गायत्री गुप्ता, श्री सुनील अरोड़ा एवं मेहरा परिवार ने सरस बनाया। विसर्जन से पूर्व आर्य समाज जयपुर-दक्षिण, डी. के. गुप्ता ने सभी को धन्यवाद अर्पित किया एवं लंगर का रसास्वादन करने के लिए अनुरोध किया। शांतिपाठ के साथ शिविरावसान हुआ। स्थानीय मीडिया का सद्भावपूर्ण सहयोग रहा।

– ईश्वर दयाल माथुर, मो.-9351219348

ईश्वरीय ज्ञान चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. मनुष्य मात्र के लिये उपलब्ध

10 या इससे अधिक सैट मंगाने पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट का लाभ उठायें

परमात्मा ने अपने ज्ञान को सभी मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रुति रूप में दिया, जो कि लम्बे कालान्तर के पश्चात् पुनः ऑडियो डी०वी०डी० (श्रुति) रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

चारों वेदों के बीस हजार चार सौ अठ्ठाईस (20,428) मंत्रों को हिन्दी में अर्थ और उनके भावार्थ सहित 362 घण्टे की 8 डी०वी०डी० में डाला गया है।

मंत्रों के साथ उनके देवता, ऋषि, छन्द एवं स्वर भी दिये गये हैं। सभी मंत्रों का शुद्ध एवं सस्वर पाठ किया गया है तथा साथ ही संगीत भी दिया है। 8 डी०वी०डी० के एक सेट की सहयोग राशि 1000 रू. है। 8 डी०वी०डी० के दस या दस से अधिक सेट मंगाने पर 50 प्रतिशत की छूट के साथ 500 रू. प्रति सेट में दिया जा रहा है। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होता है।

हमारा लक्ष्य व्यापार करना न होकर वेदों को भारतीय प्रान्तीय भाषाओं एवं विश्व के देशों की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित करके फिर श्रुतिरूप में करोड़ों लोगों तक पहुंचाना है।

अतः इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग कीजिये और आज ही अपने लिये और दूसरों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने के लिये अधिक से अधिक सैट मंगाने का निम्न सम्पर्क सूत्रों पर आदेश कीजिये।

साहित्य विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
फोनः 011–23274771, 23260985

सर्व धर्म संसद
7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–1
फोनः 011–23367943, 23363221

ईमेलः sarvadeshikarya@gmail.com
विश्वम्आर्यम सिप्रचुअल डी.वी.डी., प्रा. लि. 302, पंचशील गली नं. 1 गढ़ रोड़ मेरठ (उ. प्र.)
www.vishvamaryam.com info@vishvamaryam.com
Mob. +91-8755280038

Good News

Any Indian or Foreign Arya Samaj who requires a knowledgeable person for delivering speeches on Vedic Dharm, to perform yagya and to conduct Vedic Sanskars, may please contact Swami Somyanand Sarswati on Mobile No.- +91-9868720739 or +91-9897180196

घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने का सुनहरा अवसर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा
एक बार फिर नये क्लेवर में प्रकाशित

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ

सत्यार्थप्रकाश

मूल्य : 80 रुपये

आकर्षक एवं सुन्दर बहुरंगी आवरण तथा बढ़िया कागज

23X36 के 16वें साईज में 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।